ফাতওয়া নাম্বার: ১৮১ প্রকাশকালঃ২২-০৭-২০২১ ইং

মুসাফির কখন থেকে কসর করবে?

প্রশ্ন:

(ক) গ্রাম থেকে শহরে আসতে কিংবা শহর থেকে গ্রামে যেতে কখন থেকে কসর করা হবে?

(খ) অনেক গ্রাম একটার সাথে আরেকটা লাগানো থাকে। এক গ্রামের সীমানা শেষ হতেই অন্য গ্রাম শুরু হয়ে যায়। মাঝখানে সড়ক, ক্ষেত বা অন্য কোন কিছু থাকে না। এমতাবস্থায় আমি কি যতটুকু আমার নিজ গ্রাম বলে গণ্য হয়, সে সীমানা পার হলেই মুসাফির হয়ে যাব, না আমার গ্রামের সাথে লাগোয়া গ্রামগুলোও পার হতে হবে?

নিবেদক
নোমান
মোমেনশাহী

উত্তর:

الجواب ومنه الصدق والصواب

(ক) ৪৮ মাইল (৭৮ কিলোমিটার) কিংবা এর বেশি সফর করার নিয়তে আপনি যখন আপনার নিজ গ্রাম বা শহরের সীমানা অতিক্রম করবেন, তখন থেকেই আপনি মুসাফির গণ্য হবেন এবং কসর শুরু করবেন।

(খ) আপনার নিজ গ্রামের সীমানা পার হলেই আপনি মুসাফির গণ্য হবেন। আপনার গ্রামের সাথে লাগোয়া অন্য গ্রামগুলো পার হতে হবে না।

فقط والله تعالى أعلم بالصواب

المراجع والمصادر:

)من خرج من عمارة موضع إقامته) من جانب خروجه وإن لم يجاوز من الجانب الآخر ... (قاصدا) ... (مسيرة ثلاثة أيام ولياليها) ... (صلى الفرض الرباعي ركعتين). اهـ [الدر المختار على صدر رد المحتار: 121\2، ط. سعيد]

قال محمد – رحمه الله تعالى – يقصر حين يخرج من مصره ويخلف دور المصر، كذا في المحيط وفي الغياثية هو المختار وعليه الفتوى، كذا في التتارخانية الصحيح ما ذكر أنه يعتبر مجاوزة عمران المصر لا غير. اهـ [الفتاوى الهندية: 199\1، ط. دار الفكر]

سوال: اس ملک میں مکانات متصل اور ان میں باغات ہوتی ہیں باوجود اتصال کے نام مواضعات کے علیحدہ علیحدہ ہوتے ہیں اگر کسی کو بارادہ سفر اپنے مکان سے نکل کر دوسرے موضع میں پہنچنے کے بعد وقت نماز آگیا ہو اور وہاں سے اپنا موضع بھی نظر آتا ہو یہ مسافر قصر کرے یا اتمام کرے؟

الجواب: اس صورت میں وہ شخص قصر کرے گا کیونکہ قصر کے لئے تجاوز کرنا اپنی بستی کی آبادی سے شرط ہے، نظر آنا آبادی مانع نہیں ہے۔ اہ، فتاوی دار العلوم دیوبند: ج4 ص472 ط: دار العلوم دیوبند

سوال: ایک شخص مسافرت سے وطن مالوف میں آیا۔ اپنے مسکن سے ڈیڑھ میل کے فاصلہ پر بازار میں درزی کا کام کرتا ہے اور کبھی کبھی دو چار رات بھی وہاں پر رہتا ہے، وہ شخص نماز قصر کرے یا پوری پڑھے؟

الجواب: جس بستی اور آبادی میں وہ رہتا ہے اسی کے خروج و دخول کا نماز قصر و عدم قصر میں اعتبار ہے پس جو بزار کہ بستی مذکورہ سے منفصل ہے جیسا کہ بلاد بنگال میں سنا گیا ہے اس میں دخول و خروج کا اعتبار نہیں ہے پس شخص مذکور جب تک اپنی بستی میں اور اس کی عمارات میں داخل نہ ہوگا اس وقت تک قصر کرتا رہے گا۔ اہ، فتاوی دار العلوم دیوبند: ج4 ص467 ط: دار العلوم دیوبند

ویراجع أیضا:

بدائع الصنائع: ج- 1 ص- 221 زکریّا بکڈپو دیوبند سہارنپور، البحر الرائق: ج- 2 ص- 225 مکتبہ زکریّا، مجمع الأنھر في شرح ملتقی الأبحر: ج- 1 ص- 237 ط. دار الکتب العلمیّة، خلاصة الفتاوی: ج- 1 ص- 178 ط. المکتبة الأشرفیّة دیوبند

আবু মুহাম্মাদ আব্দুল্লাহ আলমাহদি (উফিয়া আনহু)

০৭-১২-১৪৪২ হি.
১৮-০৭-২০২১ ইং